आचार्य सन्मति सागर जी महामुनिराज पूजन

(स्थापना)

आदि गुरु की परम्परा को चिर जीवित रखने वाले।
महावीर कीर्ति गुरुवर के आदर्शों पर चलने वाले ॥
विमल गुरु की विमल प्रभा को चहुँ दिश में फैलाया है।
ऐसे गुरु सन्मति सागर का पूजन आज रचाया है ।।
दोहा - वर्तमान के वीर तुम, हो अनादि के आदि,
आकर के गुरुवर मेरी मैटो भव की व्याधि ॥

ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागरेभ्यो अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननं ।
ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागरेभ्यो अत्र तिष्ठ- तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागरेभ्यो अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।
परिपुष्पाजंलि क्षिपेत् ।

जल का स्वभाव है निर्मलता जो गुरुवर तुमसे पाया है।
निर्मल गंधोदक बनने को चरणों में आपके आया है।
मेरा मन भी निर्मल कर दो करुणा करके करुणा सागर।
मैं निज स्वभाव को पा जाऊँ मुझको आश्रय दे दो गुरुवर ॥
दोहा - जन्म-जरा-मृत दूर हो, स्वीकार जल धार ।
युगल चरण हैं आपके मम् जीवन आधार ॥

ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागराय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन के पास जो आता है वह चंदनमय हो जाता है।
गुरु चरणों का आश्रय पाकर भव का क्रन्दन खो जाता है ।।
शुभ भावों का लाया चंदन गुरुवर इसको स्वीकार करो।
अपने चरणों की रज दे दो गुरुवर मेरा उद्धार करो ॥
दोहा - राग द्वेष को दूर कर करूँ आत्म उद्धार ।
युगल चरण हैं आपके मम् जीवन आधार ॥

ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागराय भव आताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुल की धवल प्रभा से ही तन मन उज्ज्वल हो जाते है।
पर गुरु की धवल प्रभा से ही तंदुल उज्ज्वलता पाते है ।।
मैं अक्षय पद की चाह लिये लाया हूँ अक्षत हे ! गुरुवर ।
शुभ चाह रही वो राह मिले, जिससे मिल जाये शाश्वत दर ॥

दोहा - करूँ प्रार्थना आपके चरणों में त्रय बार ।
युगल चरण हैं आपके मम् जीवन आधार ॥
ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागराय अक्षय पद प्राप्तये अक्षत निः स्वाहा ।

हे ! वीर वाटिका के मालिक तुम ही हो नाथ अनाथों के।
कुछ पुष्प संजोकर लाया हूँ अपने इन नन्हें हाथों से ॥
दूजा न होगा इस जग में तुमसा कोई अतिशय योगी।
पर प्रीत न तुमसे लगा सके हम इन्द्रिय विषयों के भोगी ॥
दोहा - काम, क्रोध, मद, लोभ ने मुझपे किया प्रहार ।
युगल चरण हैं आपके मम् जीवन आधार ॥
ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

लड्डू पेड़ा नाना व्यंजन के थाल खडे भरपूर लिये।
पर षट् रस त्यागी महान इन सबसे ही अतिदूर हुऐ ॥
पंचम युग के हे ! महासंत क्या अद्भुत महिमा दिखलाई।
तुमने अपनी दिन चर्या से तप त्याग की गरिमा सिखलाई ।।
दोहा - क्षुधा रोग को दूर करो मेरा भली प्रकार ।
युगल चरण हैं आपके मम् जीवन आधार ॥
ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये राग आग है इस जग में वैराग न अब तक धारा है।
हम मोह भंवर में डूब रहे बतला दो कहाँ किनारा है ।।
तुम ही भव पार लगाओगे विश्वास है मेरे अन्तस में।
मुझमें वो ज्ञान प्रकाश भरो जो जागा है तव अन्तस में ॥
दोहा - गुरु की अनुपम कांति से जल गये दीप हजार ।
युगल चरण हैं आपके मम् जीवन आधार ॥
ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागराय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मों के कारण दुनिया में दुख ही दुख हमने झेले हैं।
चहुँ दिश है भीड़ बडी भारी हम फिर भी यहाँ अकेले हैं। ॥
दे दो हमको संयम अग्नि मिथ्यात्व कर्म को दहन करें।
वसु कर्म विसर्जन करने हम सिद्धालय पथ पर गमन करें ।।॥
दोहा - समयसार है आप में आप में मूलाचार।
युगल चरण हैं आपके मम् जीवन आधार ॥
ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागराय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मैं मोक्ष महाफल पाने को फल की शुभ भेंट ये लाया हूँ।
प्रभु आठों कर्म नशाने को शुभ भाव विमल कर आया हूँ ॥
पर्यायों में अटका अब तक निज की अनुभूति नहीं मिली।
पर्यायों में खेला अब तक आतम गुण बगिया नहीं खिली ॥
दोहा - अपनी चेतन शक्ति का कभी न किया विचार।
युगल चरण हैं आपके मम् जीवन आधार ।
ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागराय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम ही अनर्घ पद के राही मैं भव जगंल में भटक रहा।
तुम शुद्ध भाव के अनुगामी मैं तो विभाव में अटक रहा ॥
दे दो आशीष यही गुरुवर भव भव में तेरी भक्ति मिले।
बन जाऊँ शिव का राही मैं मुझको भी शाश्वत मुक्ति मिले ॥
दोहा - अष्ट द्रव्य का योग शुभ मुक्ति की दरकार ।
युगल चरण हैं आपके मम् जीवन आधार ।
ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागराय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

जयमाला के लाल की हो रही जय जयकार ।
पंचम युग के आप हैं तीर्थंकर अवतार ॥
ओम नाम को कर दिया नाथ आप साकार।
त्याग तपस्या के बने आप एक आधार ॥
सन्मति सन्मति दो हमें, दो संयम उपहार ।
शुभाशीषकी छाँव दो, कर दो इक उपकार ।
तप की परिभाषा बने किया घोर तप आप ।
तपश्चरण की आग में जला दिया भव ताप ॥
बारह विधि तप को किया चर्या से जीवंत ।
कदम बढ़े जिस पथ अहा ! पतझड़ हुऐ वसंत ॥
पाँच महाव्रत रथ बना, अश्व समिति के पाँच ।
दस धर्मों की राह पर गतिशील संन्यास ॥
आदि सूर्य के तुम हुऐ तीजे पट्टाचार्य ।
दृढ़ चर्या को लख भगा, सारा शिथिलाचार ॥
विमल कृपा से पा लिया मुनि पद का उपहार ।
शाश्वत शिखर सम्मेद पर हुआ स्वप्न साकार ।।

महावीर कीर्ति गुरु, के चरणों मे शीश ।
महसाणा में दे दिया सूरि पद आशीष ॥
वर्ष बिहत्तर तक किया धरती को पावन ।
कोल्हापुर महाराष्ट्र से था स्वर्गारोहण ॥
नाथ! आपके द्वय चरण मम् उर का श्रृंगार ।
भव भव में मिलता रहे तव चरणों का प्यार ॥
ॐ हूँ परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागराय जयमाला पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा - शीतलता मुझको मिले ऐसा दो आशीष ।
युगल चरण में आपके सदा रहे मम् शीश ॥
शांतये ! शान्तिधारा !

दोहा - नित्य करें गुरु अर्चना बन चरणों की धूल ।
युगल चरण में आपके चढ़ा रहे शुभ फूल ।।
दिव्य ! पुष्पाजलि क्षिपेत् ॥